HISTORY

1

हंपी की खोज की कहानी

(Story of Discovery- How Hampi was found)

विजयनगर के तबाह होने के लगभग दो सौ वर्ष पश्चात विजयनगर की यादें बनी रहीं। 1799 ई० में प्राचीन वस्तुओं के संग्रहकर्ता कॉलिन मैकेन्जी पहला अंग्रेज जो बाद में भारत का surveyor general बना, हंपी के खंडहरों को देखने आया। उसने कुछ हस्तलिखित पांडुलिपियाँ तथा ऐतिहासिक भवनों के चित्रों को रेखा प्रकाशित करके उस स्थान की सबसे पहले सर्वेक्षण तैयार की। यद्यपि उसकी रिपोर्ट को कभी प्रकाशित नहीं किया गया फिर भी हंपी की यादें ताजा रहीं। 19वीं शताब्दी तक लोग उस स्थान को देखने के लिए आते रहे। उनमें 1850 और 1860 ई० में पहले फोटोग्राफर आये। उनमें से एक फोटोग्राफर ~~अलेक्जेंडर ग्रीनलॉ~~ अलेक्जेंडर ग्रीनलॉ (Alexander greenlaw) भी था जिसके लगभग 60 मोमी कागज के नेगेटिव प्रिंट आश्चर्यजनक रूप से अभी तक बचे हुए हैं। यह पहले फोटोग्राफर प्रिंट उस समय के ही जन

अभी इन खंडहरों की खुदाई का काम शुरू किया जाना था। भारत के अंग्रेजी शासकों द्वारा इनकी खुदाई करवाने में रुचि भी बहुत ली गई। स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों ने हंपी के खंडहरों को बचाने तथा उस पर अध्ययन करने का प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप, यह स्थान भारत के पुरातत्व विभाग ने अपने अधिकार में ले लिया। जिनके अधिकारियों ने शीघ्र ही भवन को साफ करने तथा मरम्मत करने का कार्य आरंभ कर दिया। स्वेल द्वारा लिखी गई पुस्तक 'फॉरगॉटन एम्पायर (Forgotton Empire)' के प्रकाशन के पश्चात वह विजयनगर के बल्लारी जिले का कलक्टर था। उस कलक्टर ने हंपी की खंडहर की खोज में रुचि लेना आरंभ कर दि। उसने इन खंडहरों तक पहुँचने के लिए कच्ची सड़कें और सड़कों पर मार्ग चिह्न बनायें तथा रहने के लिए भवन भी बनवायें।

इन सभी प्रयत्नों के बावजूद, विजयनगर पर खोजों का काम तेजी नहीं पकड़ सका और हंपी की खंडहरों को ढूंढने के लिए आने वालों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई, चाहे हंपी की खंडहर दिखाई देने लगी थी। पुरातत्व अधिकारी A.H. Longhurst ने हंपी के खंडहरों के चित्र

वाली पुस्तक 1925 में प्रकाशित की। इसी की खुदाइयों का काम 1970 के दशक के अंत में एक राष्ट्रीय प्रोजेक्ट के अधीन जोर से आरंभ किया गया तथा इस स्थान को साफ करके बहुत सी खुदाइयाँ आरंभ करवाई गई। केंद्र तथा राज्य के पुरातत्व वैज्ञानिकों ने इस स्थान की पर खुदाई के काम को आगे बढ़ाया। 1980 में विजयनगर रिसर्च प्रोजेक्ट ने इस कार्य को पूरे जोर से आगे बढ़ाया।

यह कार्य अभी भी भारत के विभाग तथा कर्नाटक सरकार के Director of Archeology and Museums के सहयोग से आगे चल रहा है।